प्रसार शिक्षा निदेशालय
कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर–342304 राजस्थान, भारत

DIRECTORATE OF EXTENSION EDUCATION
AGRICULTURE UNIVERSITY, JODHPUR-342 304 RAJASTHAN (INDIA)

Prof. Ishwar Singh
Director Extension Edu.

Phone: 0291-2571 813(O)
E Mail: deeaujodhpur@gmail.com

No.F.() Estt./DEE/AU/Jodh/2018/1490

Date: 03.10.2018

दो दिवसीय अनार उत्पादन कार्यशाला का कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर में उद्घाटन

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर एवं राजस्थान अनार उत्पादन संघ भीलवाड़ा के सयुंक्त तत्वाधान में गुणवत्ता युक्त अनार उत्पादन और विपणन कार्यशाला का उद्घाटन कृषि विश्वविद्यालय, मंडोर सभागार में हुआ। कार्यशाला में संभाग भर से आये लगभग 350 अनार उत्पादकों ने भाग लिया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ बलराज सिंह, कुलपति कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर में बताया कि पश्चिमी राजस्थान में अनार का क्षेत्रफल काफी बढ़ रहा है और इस वजह से यहाँ के किसानों को इसकी खेती से अच्छा लाभ प्राप्त हो रहा है, मगर बढते क्षेत्रफल के साथ–साथ अनार मे जीवाणु झुलसा एवं सूत्रकर्मी की वजह से कई स्थानों पर किसानों को परेशानी हो रही है। अनार की अच्छी पौध आपूर्ति की भी किसानों की तरफ से भारी मांग है। इन सब समस्याओं के निराकरण हेतु इस कार्यशाला में राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र सोलापुर, महाराष्ट्र की वैज्ञानिक डॉ ज्योत्सना को विशेष तौर से आमंत्रित किया गया है। इसके साथ ही श्री प्रभाकर चांदना, श्री प्रकाश कुलकर्णी एवं श्री गोविन्द हान्डे आदि वरिष्ठ विशेषज्ञों को भी आंमत्रित कर तकनीकी व्याख्यान् आयोजित करवाये गये।

डॉ ईश्वर सिंह, प्रसार शिक्षा निदेशक ने बताया कि दिनांक 4 अक्टूबर, 2018 को भी अनार विशेषज्ञों द्वारा तकनीकी व्याख्यान् दिये जायेगें तथा दोपहर बाद अनार उत्पादकों एवं वैज्ञानिकों के मध्य खुला संवाद आयोजित किया जायेगा, ताकि किसान अपनी समस्याओं को वैज्ञानिकों के समक्ष रख उसका समाधान प्राप्त कर सके। राजस्थान अनार उत्पादन संघ के अध्यक्ष श्री अनिल राठी, ने किसानों से आवाहन् किया है कि अनार उत्पादन में कीटनाशकों का संयमित प्रयोग किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। श्री राठी ने कहा कि लवणीय पानी की समस्या

के निदान हेतु ट्यूबवैल पर वाटर सॉफ्टनर ईकाई स्थापित कर इस समस्या का निराकरण किया जा सकता है। अनार में होने वाले जीवाणु झुलसा एवं सूत्रकर्मी का समन्वित प्रबंधन पर विस्तार से चर्चा कर किसानों को समाधान बताया गया। अनार को गुणवतायुक्त एवं निर्यात योग्य बनाने के बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की गई। वैज्ञानिक राजूलाल भारद्वाज ने बताया कि अनार के नये पौधों के रोपण के साथ सूत्रकर्मी का प्रकोप होने की सम्भावना रहती हैं, अतः नई पौध को खेत में लगाने से पहले उसे सूत्रकर्मी के नियंत्रण हेतु उपचारित करना आवश्यक है। अनार में फल फटने की समस्या के प्रबंधन हेतु मृदा परिक्षण एवं पौधों में बोरॉन की कमी का पता लगाकर इसका नियंत्रण किया जा सकता है। नियंत्रित एवं समय पर सिंचाई करने से भी फल फटने की समस्या का निदान किया जा सकता हैं। इस अवसर पर निदेशक अनुसंधान डॉ बी. आर. चौधरी, संयुक्त निदेशक कृषि विस्तार श्री वी.के. पान्डे, उपनिदेशक कृषि विस्तार श्री बी.के. द्विवेदी, कृषि महाविद्यालय, जोधपुर के अधिष्ठाता डॉ उम्मेद सिंह, कृषि विज्ञान केन्द्र फलोदी, गुडामालानी, अठियासन एवं मौलासर के वरिष्ठ वैज्ञानिक भी मौजूद थे।

अनार उत्पादन प्रौधोगिकी के प्रदर्शन हेतु इस कार्यशाला में कृषि प्रदर्शनी भी लगायी जिसमें सिंचाई, जैविक उपचार, कृषि यांत्रिकी आदि के प्रदर्शन की व्यवस्था की गई। दिनांक 5 अक्टूबर को कार्यशाला में भाग ले रहे इच्छुक अनार उत्पादकों को बूढ़ीवाडा, जागसा एवं पादरू बाडमेर के उन्नत अनार उत्पादको के फार्म का भम्रण करवाया जायेगा जिससे उन्नत कृषि प्रौधोगिकी को देखकर सीख सके।

(डॉ. ईश्वर सिंह)
निदेशक प्रसार शिक्षा
कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
Agriculture University, Jodhpur